श्री कलराज मिश्र

मानननीय राज्यपाल, राजस्थान का उद्बोधन

स्वच्छ भारत – सशक्त भारत, बापू के सपनों का भारत

महात्मा गांधी की 150वीं जयंती पर विशेष ड़िजीटल मल्टीमीड़िया प्रदर्शनी

दिनांक – 15 अक्टूबर, 2019　　　　**समय – प्रातः 11. 00 बजे**

स्थान – उदयपुर

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की 150वीं जयंती अभी हाल ही में मनाई गयी है। आज प्रादेशिक लोक सम्पर्क ब्यूरो द्वारा महात्मा गांधी के जीवन पर आयोजित विशेष डिजीटल मल्टीमीड़िया प्रदर्शनी के माध्यम से हम गांधी जी का स्मरण कर रहे हैं। इस अवसर पर आप सबको बहुत–बहुत शुभकामनाएं।

महात्मा गांधी का जीवन भारत ही नहीं पूरे विश्व और पूरी मानवता के लिए प्रेरणा का संदेश देता रहा है। इसी श्रंखला में आयोजित यह प्रदर्शनी विभिन्न चित्रों और उनके जीवन के प्रसंगों के माध्यम से हमें उनके बताए मार्ग पर चलने की प्रेरणा देने का अवसर प्रदान करती है।

मुझे बताया गया है कि लोक सम्पर्क एवं संचार ब्यूरो द्वारा देश भर में ऐसी 23 ड़िजीटल मल्टीमीड़िया प्रदर्शनियां आयोजित की जा रही हैं। राजस्थान में उदयपुर को यह प्रदर्शनी आयोजित करने का सौभाग्य मिला है। मैं, उदयपुर के युवाओं, विद्यार्थियों व आमजन से आग्रह करता हूं कि वे इस प्रदर्शनी को अवश्य देखें और बापू के जीवन से प्रेरणा ग्रहण करें। प्रादेशिक लोक सम्पर्क ब्यूरो, राजस्थान द्वारा इससे पूर्व भी महात्मा गांधी के जीवन पर जयपुर और सीकर में ऐसी ही प्रदर्शनियों का आयोजन किया जा चुका है।

महात्मा गांधी का जीवन और उनके कार्य उन्हें इतनी ऊंचाई प्रदान करते हैं कि आज उनके जन्म के 150 वर्ष बाद भी हमें न केवल प्रेरणा मिल रही है बल्कि भावी पीढ़ी के लिए भी इसमें संदेश निहित हैं। गांधी जी ने स्वतंत्र भारत में अपने जीवन का बहुत कम समय व्यतीत किया। इसके बावजूद हम देखते हैं कि आज देश का विकास और विकास की संकल्पना उनके स्वदेशी ग्राम स्वराज्य और स्वावलंबन जैसे सिद्धान्तों के बिना अधूरी है।

महात्मा गांधी एक ऐसे व्यक्तित्व थे जिनके सिद्धान्त देश, धर्म, भाषा, जाति, सम्प्रदाय और वर्ग सबसे ऊपर उठकर सम्पूर्ण मानवता के लिए उपयोगी और प्रासंगिक बने रहेंगे। अगर हम इतिहास पर नज़र ड़ालें तो विश्वभर में पिछली शताब्दी के दौरान साम्राज्यवाद के खिलाफ चले सभी आन्दोलनों में गांधी की छाप नजर आती है।

दक्षिण अफ्रिका में नेलसन मण्ड़ेला हों या अमरीका में मार्टिन लूथर किंग, फिलीस्तीन में यासर अराफात हों या पौलेण्ड के लेक वालेसर सबने किसी न किसी रूप में गांधी को अपना प्रेरणा स्रोत माना। गांधीजी के विचारों और आचरण के साथ–साथ उनके सिद्धान्तों और अहिंसा में उनकी अटूट निष्ठा ने दुनिया के कई देशों में आन्दोलनों की दिशा ही बदल दी।

सत्याग्रह जैसा महात्मा गांधी द्वारा प्रदान किया गया, वह विश्वभर में असहमति और विरोध व्यक्त करने के लिए एक प्रमुख मार्ग बनकर सामने आया। अहिंसात्मक तरीके से भी विरोध किया जा सकता है और ब्रिटेन जैसी महाशक्ती को भारत ही नहीं कई देशों से अपने पैर खींचने पड़ सकते हैं, यह गांधीजी ने कर दिखाया।

आज का विश्व जिन बड़ी चुनौतियों से जूझ रहा है, उनके निराकरण का मार्ग भी गांधीजी के विचारों से खुलता है। पर्यावरण असंतुलन, आतंकवाद, चारित्रिक गिरावट और अविवेकपूर्ण तरीके से हो रहा विकास, वे चुनौतियां हैं, जिनका सामना पूरा संसार कर रहा है। महात्मा गांधी ने बहुत संक्षेप में मनुष्य, समाज और राष्ट्र के निर्माण का एक छोटासा तरीका बताया।

यंग इण्डिया समाचार पत्र के 22 अक्टूबर,1925 के अंक में गांधी जी द्वारा गिनाये गये 7 सामाजिक पापों की सूची प्रकाशित हुई। उन्होने इन 7 पापों का उल्लेख किया – सिद्धान्त विहीन राजनीति, कर्मविहीन धन, आत्मा के बिना सुख, चरित्र के बिना धन, नैतिकता विहीन व्यापार, मानवीयता विहीन विज्ञान और त्याग विहीन पूजा, जिनसे बचना चाहिए ।

गांधीजी के अनुसार नैतिकता, अर्थशास्त्र, राजनीति और धर्म अलग–अलग इकाइयां हैं पर इन सबका उद्देश्य एक ही है और वह है सर्वोदय। राजनीति अगर लक्ष्यहीन और आदर्शों पर टिकी नहीं है तो वह पवित्र नहीं हो सकती। इसी प्रकार अनुचित साधनों से बिना परिश्रम कमाया गया धन, एक प्रकार से चुराया हुआ धन है। गांधी जी का आत्मा से अभिप्राय मन की उस आवाज से है, जो गलत और सही का विवेक प्रदान करती है। इसी तरह ऐसा विज्ञान जो मानवता के विपरीत कार्य करे वह वरदान नहीं अभिशाप है।

महात्मा गांधी ने सार्वजनिक क्षेत्र में कार्य कर रहे लोगों का नैतिक चरित्र का होने की जरूरत पर न केवल बल दिया बल्कि खुद पूरा जीवन त्याग की मूर्ति बनकर गुजारा। अहिंसा बापू द्वारा दिया गया वह मंत्र है जिसमें विश्व शांति की पूरी संभावना छिपी हुई है। उन्होने कहा था कि अहिंसा कायर लोगों के लिए नहीं है। भगवान महावीर स्वामी ने भी हजारों साल पहले यही कहा था क्षमा वीरस्य भूषणम। आज अहिंसा की शक्ति को पहचानने का समय है।

इस कार्यक्रम में आये युवाओं को मैं विशेषरूप से बताना चाहूंगा कि महात्मा गांधी का ग्राम स्वराज्य, स्वदेशी और स्वावलंबन का मार्ग विशेष रूप से अपनाने योग्य है। स्वावलंबन एक ऐसा जीवन दर्शन है जो मनुष्य को दूसरे पर निर्भर होने से रोकता है।

इससे व्यक्ति समाज और अन्ततः राष्ट्र को ऐसे नागरिक मिलते हैं जो चरित्रवान होने के साथ साथ श्रम का महत्व समझने वाले और अनुशासित होते हैं। युवाओं को आज भविष्य की ओर देखते हुए अपने अतीत का स्मरण भी करना चाहिये। भारत हमेशा से ऐसा देश था, जो अभावों के बावजूद संतुष्टि महसूस करता था। यहां के गांव पूरी तरह आत्मनिर्भर थे । 18वीं और 19वीं शताब्दियों में उपनिवेशवादी ताकतों ने समृद्ध भारत के संसाधनों को लूटा–खसोटा। गांधीजी ने भारत की आत्मा की ताकत, धर्म में नागरिकों की अटूट आस्था और परावलम्बी न होने की देश की प्रकृति को पहचाना। उन्होने जिन चीजों को कमजोरी माना जाता था उन्हें ताकत के रूप में बदल ड़ाला।

गांधी जी ने एक ताबीज दिया था जिसका उल्लेख मैं आज विशेष रूप से करना चाहूंगा। गांधीजी ने कहा था मैं तुम्हें एक तिलिस्म देता हूँ जब भी दुविधा में हो या जब अपना स्वार्थ तुम पर हावी जो जाए तो इसका प्रयोग करो। उस सबसे गरीब और दुर्बल व्यक्ति का चेहरा याद करो जिसे तुमने कभी देखा हो, और अपने आप से पूछो–जो कदम मैं उठाने जा रहा हूँ वह क्या उस गरीब के कोई काम आएगा ? क्या उसे इस कदम से कोई लाभ होगा ? दूसरे शब्दों में क्या यह कदम लाखों भूखों और आध्यात्मिक दरिद्रों को स्वराज देगा ? तब तुम पाओगे कि तुम्हारी सारी शंकाएं और स्वार्थ पिघल कर खत्म हो गये हैं। यह तिलिस्म आज भी उतना ही कारगर है।

हमारा देश विभिन्न धर्मो, जातियों, भाषाओं और संस्कृतियों का संगम है। यह विविधता भरी संस्कृति भारत को पूरी दुनिया में विशिष्ट बनाती हैं। आज का समय इस संस्कृति को बनाये और बचाये रखने का है। देश के सामने जो चुनौतियां हैं, उनमें गरीबी, अशिक्षा और सामाजिक पिछड़ापन प्रमुख है। देश के नागरिकों का समग्र विकास हो इसके लिए सरकार निरंतर कार्य कर रही है। इन कार्यों की गति बनी रहे, इसके लिए सभी लोगों का सहयोग अत्यन्त आवश्यक है। सहयोग और शांतिपूर्ण अस्तित्व हमारी संस्कृति का भी अभिन्न हिस्सा है।

इस समय हम सबका दायित्व है कि देश को एक ऐसे मार्ग पर ले जाएं जहां सभी लोग अपने–अपने विश्वासों पर आस्था रखते हुए स्वतंत्रता का अनुभव कर सकें। महात्मा गांधी के विचार और उनका जीवन इस काम में सबसे उपयोगी सिद्ध हो सकता है। प्रारंभिक कक्षाओं से ही विद्यार्थियों को हमारे राष्ट्रनायकों के जीवन और उनके कार्यो की जानकारी दी जाती है। इसके साथ ही विद्यार्थियों को यह शिक्षा भी मिलनी चाहिए कि वे व्यावहारिक रूप में इन सिद्धान्तों को किस प्रकार जीवन में आत्मसात कर सकें।

महात्मा गांधी के विचार आज भी प्रासंगिक बने हुए हैं। ट्रस्टीशिप का उनका सिद्धान्त इतना प्रेरणादायी है कि उस पर चलकर विकास के सभी लक्ष्य हासिल किये जा सकते हैं।

उन्होंने कहा था कि जो लोग शासन में हैं, वे जनता की सम्पत्ति को अपना ना मानते हुए, पूरे समुदाय का मानें और खुद उसका न्यासी (Trustee) बनकर कार्य करें। इससे ईमानदारी और नैतिकता का उदाहरण प्रस्तुत होगा।

पर्यावरण को हो रहे नुकसान से आज पूरा विश्व चिंतित हैं। इस दिशा में महात्मा गांधी का बताया रास्ता कि वस्तुओं का उत्पादन गांवों में ही हो और ऐसी सामग्री से हो जो वहीं मिलती हो तो प्रदूषण और पर्यावरण असंतुलन जैसी समस्या से बचा जा सकता है। सरकार ने इस दिशा में एकल उपयोग प्लास्टिक मुक्त भारत बनाने का महत्वपूर्ण कार्य आरंभ किया है। आप सबसे इस अनुष्ठान में सम्मिलित होने का मैं आग्रह करता हूँ। यह भविष्य में होने वाली बहुत सारी समस्याओं को दूर करेगा।

सरकार ने स्वच्छ भारत अभियान के माध्यम से भी एक संदेश दिया है, जिसके सार्थक परिणाम मिले हैं। इस कार्य में समाज के सभी वर्गों की जो भागीदारी रही है वह उत्साहवर्द्धक है। आज प्रादेशिक लोक सम्पर्क ब्यूरो द्वारा इसी दिशा में एक और सार्थक पहल की जा रही है।

जल संरक्षण हमारी आज की प्राथमिकता है। जल संकट से जूझने और अपनी पीढ़ियों के लिए पानी की विरासत बची रहे इस उद्‌देश्य से जलयोद्धा अभियान आरंभ किया जा रहा है।

इसके अंतर्गत ब्यूरो राज्यभर में जनचेतना कार्यक्रम चलाएगा और राजस्थान के सभी जिलों में जल संरक्षण के बारे में चेतना के प्रचार–प्रसार के लिए जलयोद्धा तैयार करेगा। यह जलयोद्धा अपने अपने गांव, शहर और समुदाय में लोगों का जल संरक्षण के राष्ट्रीय अभियान से जोड़ेगे और इस अभियान से प्रेरित करेंगे। ऐसे पांच जलयोद्धाओं को चयनित किया गया है जिन्हें इस अभियान का शुभारंभ का गौरव मिल रहा है और उन्हें इसके लिए प्रेरित करने में मुझे प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है।

महात्मा गांधी के जीवन और उनके कार्यो पर आयोजित यह ड़िजीटल मल्टीमीडिया प्रदर्शनी आप सबके लिए गांधी जी को समझने का एक और अवसर प्रदान करेगी। यह मेरी आशा और शुभकामना है।

धन्यवाद। जयहिन्द।